

आद्रा मंडल के विभिन्न स्टेशनों से संलग्न मन्दिर और इतिहास प्रसिद्ध स्थान - एक विहंगम दृष्टि

आद्रा मंडल के विभिन्न स्टेशनों के कई किलोमीटर की परिधि में कई तरह के मन्दिर मानो बिखरे पड़े हैं। एक तरफ मानभूम और पुरलिया जिला के जैन सभ्यता के आसाधारण मन्दिर तथा पंचकोट राजवंश का शिल्प और संस्कृति है, तो दूसरी तरफ वैष्णव पंथ से प्रभावित मन्दिरों का देश बाँकुड़ा और विष्णुपुर, जहाँ के विश्व विख्यात मन्दिर और मल्ल राजवंश इतिहास प्रसिद्ध हैं। मंडल का कुछ भाग मेदिनीपुर एवं बर्धमान से तथा कुछ झारखण्ड राज्य के सिंहभूम एवं बोकारो जिला से जुड़ा है।

जयचण्डी पहाड़ : हम लोग पहले आद्रा से आद्रा-आसनसोल शाखा के प्रान्तिक स्टेशन बर्नपुर की ओर चलेंगे। आद्रा स्टेशन के ओवरब्रिज से चढ़ने पर जयचण्डी

पहाड़ का नयनाभिराम दृश्य दिखाई पड़ता है। 110 करोड़ वर्ष पहले ग्रेनाइट पत्थर से निर्मित इस पहाड़ में कई गुफाएं एवं शिखर हैं। पंचकोट राज में निर्मित प्राचीन चण्डीमन्दिर, ब्रिटिशों द्वारा टेलीग्राफ युग से भी पहले निर्मित प्राचीन



संपर्क व्यवस्था का प्रतीक "सीमाफोर स्तम्भ", बाघलाइन का कालीमंदिर इत्यादि बहुत से ऐतिहासिक तथ्यों से समृद्ध यह पहाड़ राज्य के पर्यटन और पर्वतारोहण के मानचित्र में एक विशेष स्थान बना चुका है। वर्तमान समय में स्टेशन और इस पहाड़ को पर्यटकों के लिए और लुभावन बनाने के लिए मंडल रेल प्रबंधक श्री ओम प्रकाश चौबे एवं माननीय सांसद श्री बासुदेव आचारिया ने विशेष प्रयास किए हैं। और इस स्टेशन को सेटलाइट स्टेशन के रूप में उन्नत करने की व्यवस्था की जा रही है। स्टेशन से निकट ही एक कि.मी. की दूरी पर रघुनाथपुर आद्रा सड़क मार्ग पर सौ बरस से अधिक प्राचीन रायमाता मन्दिर है। इस में हनुमान एवं शिव के भी मंदिर हैं। रायमाता, स्थानीय हिन्दुओं के, विशेषकर मारवाड़ी समाज की प्रसिद्ध देवी माता है। हाल ही में इस मंदिर को संस्कारित किया गया है। पास ही अवस्थित है विजय कृष्ण गोरस्वामीजी का मंदिर और आश्रम।

जयचण्डी पहाड़ के निकटतम गाँव नन्दूवाड़ा में प्राचीन मल्ला गुलि शिवमन्दिर के चैत्र-शेष का चडक उत्सव विख्यात है। रघुनाथपुर शहर में प्रवेश करते ही सौ बरस से अधिक प्राचीन ठाकुर बाड़ी में रामसीता और लक्ष्मीनारायण का दर्शनीय मंदिर का परिवेश मनोरम है। स्टेशन से 3 कि.मी. की दूरी पर महकमा शहर रघुनाथपुर का प्राचीन बूढ़ो शिवमन्दिर, पंचकोट राजाओं द्वारा निर्मित रघुनाथ मन्दिर (वर्तमान में ध्वंसस्तूप), कालीमंदिर तथा अन्य कई मन्दिर देखे जा सकते हैं। तसर शिल्प के लिए विख्यात इस शहर (नाम करण रघुनाथमन्दिर से) रघुनाथपुर से 6 कि.मी. दूर मंगल दा गाँव है। लगभग हजार ई० में निर्मित यह समस्त जनपद पंचकोट राजवंश से संबंधित था। टेराकोटा के तीन मन्दिरों के ध्वंसावशेष यहाँ मिले हैं लेकिन मंगलदा अंचल में भरपूरनाथ (शिव) का मन्दिर और उसका गाजन उत्सव सुविख्यात है।



बेरो: जयचण्डी से पाँच किलोमीटर की दूरी पर बेरो स्टेशन है। बेड़ो शब्द का द्वाविड़ भाषा में अर्थ है बेड़ (घेरा) देना। पहले इस स्टेशन का नाम खजुरा था। 1668 से 1703 ई० तक के बीच पंचकोट राज बलभद्र शेखर ने दक्षिणी ब्राह्मण रंगराज गोरस्वामी का शिष्यत्व ग्रहण किया और राम मंत्र से दीक्षित हुए। यही गोरस्वामी लोग परवर्ती समय में आचारिया अथवा आचार्य उपाधि धारण कर बेरों में निवास कर रहे हैं। गद्दीबेड़ो का रघुनाथ मन्दिर उस समय का साक्षी है। बेरो के ग्रेनाइट पत्थर के छोटा टीला की पदभूमि में श्वेत पत्थर की देवी चण्डी की मूर्ति युक्त मन्दिर है और इनके नाम के अनुसार ही यहाँ "खिलाई चण्डी का मेला" 350-400 वर्ष पुराना है। प्रत्येक वर्ष पौष संक्रान्ति से शुरू होने वाले इस मेले को इस क्षेत्र के सभी लोगों को एक मिलन स्थल में लाने का श्रेय जाता है। बेरो से कुछ ही दूरी पर चिनपिना गाँव में प्राचीन शिव मन्दिर है - ईशरा स्थान। स्टेशन से एक कि.मी. की दूरी पर है आग्नेय शिला की कूप पहाड़ी और एक विशिष्टता वाली छलकी पहाड़ी है। पाँच पहाड़ी पर भुलानियां देवी का पूजा स्थल है। इसके बाद पाँच कि.मी. की दूरी पर आता है रामकनाली।

रामकनाली: स्टेशन से 2-3 कि.मी. की दूरी पर है - गढ़ पंचकोट राज्य की राजधानी का

ध्वंसावशेष। 962 से 1770 ई० तक प्रायः 800 वर्षों के पंचकोट राज में 32 राजाओं ने राज किया। धारा नामक जलप्रपात, पहाड़ पर 500 फुट ऊपर मूल दुर्ग और उसके भीतर पत्थर के रघुनाथ मन्दिर के ध्वंसावशेष देखे जा सकते हैं। समतल भूमि पर बहुत से तालाब, रानीमहल, पक्की इंट से बना टेराकोटा का पंचचूड़ा मन्दिर वा राम मन्दिर, कल्याणेश्वरी मन्दिर, कंकाली देवी मन्दिर इत्यादि बहुत सारे मंदिरों का ध्वंसस्तूप देखा जा सकता है। "धारा" संस्था पहाड़ की गोद में स्थित उस विस्मय को इतिहास प्रेमी लोगों की दृष्टि में लाने की आप्राण चेष्टा कर रही है। बराकर रोड से चौरासिया साइडिंग जाने वाली लेवल क्रसिंग पार कर पंचकोट पहाड़ की ओर 2-3



कि.मी. की दूरी पर मदनडीह ग्राम में विरंचिधाम नामक शिव क्षेत्र है। सीढ़ी से पहाड़ की ऊँचाईयों में कुछ ऊपर जाने पर प्राचीन रेख देउल शैली का विरंचिनाथ मन्दिर है जिसका शिवलिंग बहुत पुराना है। मन्दिर के पास ही प्राचीन जलधारा है। दोल उत्सव के समय यहाँ बहुत सारे लोगों का समागम होता है। महाप्रभु मन्दिर, काली मन्दिर, इत्यादि कई एक मन्दिर का यह क्षेत्र मनोरम एवं शान्तिपूर्ण लगता है। सतसंग प्रेमी मनुष्यों के लिए इस स्टेशन से जुड़ा क्षेत्र विख्यात है। श्री ठाकुर अनुकूल चन्द्र का रघुनाथपुर महकमा में वृहद मठ, सतसंग आश्रम और मन्दिर सतसंगियों का पीठस्थान है। पंचकोट पहाड़ और इसकी आयुर्वेदिक वनौषधि के आकर्षण से बहुत लोग यहाँ आते हैं। पहाड़ के एक और भाग लखनपुर में जर्मन-जल-प्रकल्प है जो आद्रा रघुनाथपुर के जल संकट को कम करने में सहायक हुआ। पश्चिम बंग सरकार पहाड़ की गोद में काठ का बंगला बनाकर पर्यटकों को इस अंचल में आकर्षित कर रही है।

मुराडी: रामकनाली से पाँच कि.मी. दूरी पर मुराडी स्टेशन मंडल के अन्यान्य ऐतिहासिक स्टेशनों में अन्यतम है। मुराडी - अर्थात् माड़ीडांगा अथवा श्मशान। इस श्मशान के बीच खड़ा होकर जिन्होंने देश सेवा की मशाल जलायी, जो यहाँ की धरोहर, इस मंडल, देश और मानव जाति के गौरव हैं, वे थे मानभूम केशरी अन्नदा प्रसाद चक्रवर्ती जो बाद में सद्गुरु असीमानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुए। इनके पूर्वज पंचकोट



राज्य के राजपुरोहित थे। इस स्टेशन को रेलवे ने मॉडल स्टेशन के रूप में घोषित किया है। स्टेशन से संलग्न कालीमंदिर का इतिहास सर्वविदित है। अन्नदा प्रसाद ब्रिटिश राज शक्ति के विरुद्ध विद्रोह कर असहयोग आंदोलन में कूद पड़े। ब्रिटिश सरकार द्वारा नजरबंद अवस्था में स्टेशन से जुड़े अश्वत्थ वृक्ष के नीचे एक झोपड़ी में वे मातृ आराधना में लीन हो गए। कहा जाता है कि माँ काली ने उन्हें दर्शन दिए और माता की प्रेरणा से ही वहाँ उनका एक सुन्दर मन्दिर बना। यहाँ से तीन किलोमीटर की दूरी पर विजय कृष्ण आश्रम और रिलीफ सोसाइटी तथा नेताजीआई हास्पिटल (नेत्र चिकित्सालय) है। इसके अलावा यहाँ पर प्राचीन शिवमंदिर, पंचमुखिका आसन (अश्वत्थ वृक्ष के

नीचे पंचमुंडी आसन 100 वर्ष पुराना है और यह पंचकोट राज कल्याण शेखर के गुरु का आसन है।) और स्वामीजी

का समाधि स्थल दर्शनीय है। मानभूम जिला में तत्कालीन प्रथम राजनैतिक सम्मेलन रामचन्द्रपुर में हुआ और

इसके अध्यक्ष थे विश्व विख्यात क्रान्तिकारी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस। अन्नदा प्रसाद जी ने उनके आगमन के लिए 1928 में कुछ ही दिनों में ही मुराडी से बराकर रोड में मिलने वाली एक सड़क का निर्माण कराया था जिसका नाम रखा सुभाष रोड। 1939 में सुभाष चन्द्र फिर मानभूम में आए और एक दिन में ही मानभूम क्षेत्र में तीस बैठकों को संबोधित किया जब कि उन्हें 103 डिग्री बुखार था। उस समय बैठकों के लिए जाने हेतु कोई गाड़ी देने को तैयार नहीं हुआ तब पंचकोट राजकुमार प्रकृतीश्वर सिंहदेव ने स्वयं अपनी गाड़ी में नेताजी को बैठाकर मानभूम का भ्रमण कराया। मीटिंग के बाद आद्रा स्टेशन में ट्रेन पकड़ने के लिए आते हुए इनकी गाड़ी के सामने एक अंधा व्यक्ति आ गया। नेताजी उस अंधे को जकड़कर रोने लगे तथा अन्नदा प्रसाद से इन लोगों के लिए कुछ करने को कहा। इन्हीं की प्रेरणा से असीमानन्द ने नेताजी आई हास्पिटल का निर्माण कराया। 1959 में भारत के प्रथम रेल मंत्री एवं इण्डियन नेशनल आर्मी के भूतपूर्व मेजर जेनरल शाह नवाज खाँ ने इस अस्पताल का उद्घाटन किया। यह अस्पताल पूर्वी भारत में नेत्र चिकित्सा जगत में विशाल वट वृक्ष की तरह है जो गरीब और मेहनती लोगों की आशा- भरोसा है। स्वामीजी और नेताजी का सपना इस तरह पूरा हुआ है। स्टेशन से सुभाष रोड पकड़कर जाते हुए कोटालडी ग्राम में पहले उड़िया बाबा का आश्रम आता है - 150 वर्ष पुराने साधु का साधना स्थल उनकी समाधि, छिन्नमस्ता मन्दिर तथा मूर्ति और साधु बाबा की 6 फुट लम्बी जटा दर्शनीय है। कुछ और दूरी पर महाप्रभु का स्थान है। भक्ति रत्नाकर ग्रंथ से पता चलता है कि महाप्रभु श्री कृष्ण चैतन्य वृन्दावन से पुरी जाते समय इस स्थान पर एक अश्वत्थ वृक्ष के नीचे शरण लिए थे। मन्दिर सुन्दर है और स्थान मनोरम। स्टेशन से पूरब की ओर डेढ़ कि.मी. की दूरी पर गांगपुर गाँव में 1702 - 03 साल में निर्मित रघुनाथ जी का पत्थर निर्मित "आठ चाला" मन्दिर है जिसके प्रतिष्ठाता पंचकोट राजा वैद्यनाथ शेखर थे। मुराडी गाँव के एक दम अन्तिम छोर पर प्राचीन भूतनाथ शिव मन्दिर है। वह स्थान शांत है जो एक साधु का साधना स्थल है इसकी विशेषता है कि यहाँ बिल्ली, कुत्ते और बंदर साथ-साथ रहते हैं। इसके बाद आठ कि.मी. दूरी पर आता है मधुकुण्ड।

मधुकुण्डा: स्टेशन के नामकरण में ही इस क्षेत्र का महत्व पता चलता है। स्टेशन से संलग्न कालीमंदिर हैं। मधुकुण्डा से 9 कि.मी. दूरी पर विहारीनाथ पहाड़ है यह बांकुड़ा में सर्वोच्च (448 मी० ऊँचा) है और यहाँ एक बड़ा जलाशय भी है। बिहारीनाथ (शिव) के मन्दिर में श्रावण में बहुत से लोगों का समावेश होता है। यहाँ पार्श्वनाथ का 12 हाथ लम्बा मूर्ति और नाग क्षेत्र युक्त लोकेश्वर विष्णु की मूर्ति दर्शनीय है।

दामोदर: मधुकुण्डा से पांच कि.मी. की दूरी पर आद्रा मंडल के बृहत्तम नदी पुल (670 मि.) से दामोदर नदी को पारकर आता है - दामोदर स्टेशन। एक समय बंगाल का हवांगहो, यह दामोदर नदी (उद्गम से मुहाने तक 370 मील लम्बी) छोटानागपुर मालभूमि के पलामू जिला का खमारपत पहाड़ से निकलकर 3 ओर से आद्रा मंडल को घेरे हुए है। स्टेशन से एक कि.मी. की दूरी पर नदी और संलग्न अंचल वनभोज के लिए अत्यंत उपयुक्त है यहीं एक किनारे बाबा भूतनाथ जी का प्राचीन मन्दिर और खडे बाबा नामक साधू हैं जो 28 साल से खडे होकर साधना कर रहे हैं। 8 कि.मी. दूरी पर इस शाखा में मंडल का अंतिम स्टेशन बर्नपुर है।

बर्नपुर : बर्नपुर का इस्को (1918) एवं बर्न एण्ड स्टैण्डर्ड कंपनी मार्टिन बर्न और शेन बर्न ने बनाया । और इसका नामकरण इसी से हुआ है। बर्नपुर स्टेशन से एक कि.मी. दूरी पर प्राचीन मंदिरो का क्षेत्र है “बारी मैदान” । यहाँ काली मंदिर, शिवमंदिर, राधाकृष्ण एवं शनि महाराज का मंदिर दर्शनीय है। सात कि.मी. दूरी पर इस क्षेत्र का विशाल वनभोज (पिकनिक) स्थल है लेमेयर या नेहरु पार्क। स्टेशन से बस से आसनसोल होते हुए 15 कि.मी. की दूरी पर विख्यात कल्याणेश्वरी मंदिर है। कहा जाता है कि पंचकोट वंश के राजा कल्याणशेखर , वल्लाल सेन की कन्या से विवाह करने पर देहेज के रूप में कुल देवी श्याम रुपा को पाया। इसी देवी की अन्य



मूर्ति को राजा कल्याणेश्वरी नामक स्थान पर प्रतिस्थापित कर कल्याणेश्वरी देवी के रूप में पूजा करने लगे। **घाघर बूड़ि माता** मंदिर से एक कि.मी. की दूरी पर है मायथान डैम । इस अंचल की शोभा से आकृष्ट होकर प्रति वर्ष हजारों पर्यटक यहाँ आते हैं। आसनसोल से पूरब की ओर काली पहाड़ी जाने के रास्ते में राष्ट्रीय राजमार्ग २ पर घाघर बूड़ि का मन्दिर है। इसे पंचकोट राजा नीलमणि सिंह देव ने बनवाया था।

यह इस क्षेत्र की जाग्रत माता है और मन्दिर का परिवेश अत्यंत मनोरम है। यहाँ से कुछ मील की दूरी पर चुरुलिया नामक स्थान है जहाँ विद्रोही कवि नजरुल का जन्म स्थान है। बर्नपुर को मॉडल स्टेशन घोषित किया गया है।

आद्रा से अब हमलोग दक्षिण पूर्व की **आद्रा - मेदिनीपुर शाखा** के स्टेशनों की ओर चलेंगे। पहला स्टेशन है **मेटालशहर** इसके 6 कि.मी. दूरी पर है **इन्द्रबिल** । यहाँ से एक कि.मी. की दूरी पर तालाजूड़ी गाँव के निकट पहले वर्णित 'सीमाफोर स्तम्भ' और बहुत सारे शिव मन्दिर दिखते हैं। यहाँ से 7 कि.मी. दूरी पर **सिरजाम** स्टेशन है जो चौबीसवे तीर्थंकर महावीर के समय का जैन धर्म क्षेत्र एवं रक्त मृत्तिका (लाल माटी का) नगरी है।

झाँटीपहाड़ी: सिरजाम 9 कि.मी. दूरी पर झाँटीपहाड़ी स्टेशन है। झाँटी वृक्षों के वन से स्टेशन का यह नाम पड़ा। यह क्षेत्र तेल (सरसों) निकालने की मशीनों के लिए प्रसिद्ध है। झाँटी पहाड़ी में वैशाख माह का आदिवासी पर्व, ज्येष्ठ माह का श्रीनाथ गाजन और मधुशुक्ला वसंती का चंडी दास मेला विख्यात है। यहाँ से 9 कि.मी. दूरी पर छतना है।

छतना: छत्रिय राजाओं की राजधानी छत्रिनानगर से छतना नाम पड़ा है। छतना में अवस्थित सामंत भूम की अधिष्ठात्री देवी बासुली माँ मंदिर, "श्री कृष्ण कीर्तन" के रचनाकार बडु चण्डीदास की स्मृतियां संजोए है। राजा उत्तर हमीर ने 1553 साल में प्रथम बासुली मन्दिर बनवाया। तृतीय और वर्तमान में स्थित पंचरत्न मंदिर रानी आनंद कुमारी ने 1873-75 में बनवाया।

छतना से 9 कि.मी. दूरी पर पर्वतारोहियों का पसंदीदा सुसुनियाँ पहाड़ है - 440 मीटर ऊँचाई और विस्तार 2 मील तक। पहाड़ में प्राकृतिक झरने की धारा एवं संस्कृत भाषा एवं ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण तीसरी चौथी शताब्दी का दो शिलालेख दर्शनीय हैं। यह शिला लेख पढ़ना सम्भव हुआ है और एक अजाना रहस्य उद्घाटित हुआ है। एक लिपि में लिखा है कि चक्रधारी देवता के मुख्य सेवक पुष्करणा अधिपति श्री सिंह बर्मन का पुत्र श्री चन्द्र बर्मन ने एक कीर्ति उत्सर्ग किया, दूसरे में लिखा है कि धोसा ग्राम, चक्रस्वामी अथवा विष्णु को उत्सर्ग किया गया। सुसुनिया पहाड़ के पदभूमि में 545 क्वार्ज आइट पत्थर निर्मित हथियार अविष्कृत हुए हैं। प्रागैतिहासिक



नरसिंह देव - जलधारा

पाषाण युग के इन हथियारों का निर्माण कौशल एवं महागज का जीवाश्म देखकर लगता है कि यह तृतीय हिमयुग (2 लाख 25 हजार से 1 लाख वर्ष आगे) के नियाण्डरथल मानव समुदाय की बस्ती थी जो फ्रांस, जर्मनी एवं इराक के मानव समुदाय से मिलता है। यहाँ पर मारंगभेरी, भरतपुर एवं भालूकगुहा वर्तमान है। इतिहासकार डा० अतुल सुर के मतानुसार बंकगिरि एवं सुसुनियाँ पहाड़ एक ही है। पूर्वकाल में बंक गिरि अर्थात् सुसुनियाँ पहाड़ पर शिविराज बैसान्तर ने एक आश्रम बनवाया, और शिवि धर्म के प्रचार में लग गए। गौतम सिद्धार्थ महानिष्क्रमण के बाद यहाँ आए थे और बैसान्तर के शिष्य आरध मुनि का शिष्यत्व ग्रहण कर पाँच वर्ष तक शिवि धर्म का अनुपालन किया। परवर्ती समय में गौतम बुद्ध ने कहा था कि उनका बुद्ध धर्म इसी शिवि धर्म पर आधारित है। वहाँ पर स्थित गोपीनाथ भवतारिनी आश्रम के साधुबाबा के अनुसार हिरणकश्यप के समय का यह स्थान है। इसका साक्षी है यहाँ स्थित नरसिंह देव की पत्थर मूर्ति एवं सुषुप्त हाथी की आकृति का पहाड़ एवं निरंतर बहने वाली जलधारा। यहाँ पर प्रसिद्ध संत कृष्णानंद स्वामी ने तपस्या की थी।

बांकुड़ा: हाल्ट स्टेशन **आँचुड़ी** को पारकर 11 कि.मी. दूरी पर बांकुड़ा पहुँचते हैं। दो हजार वर्ष पहले इसका जैन युग में सूक्ष्मभूमि नाम था। तीन सौ वर्ष पहले इस जगह का नाम बानकुण्डा था। 1779 ई. में रेनॉल नक्शा में पहली बार BANCOORAH शब्द का प्रयोग देखा गया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी और ब्रिटिश राज के अधीन जंगल महल जिला का मुख्यालय था बांकुड़ा। बंग+कुड़ा - AUSTRO ASIATIC LANGUAGE बांग्ला की प्राचीन भाषा के अनुसार बंग-ना और कुड़ा-छोटा अर्थात् ना छोटा अर्थात् बड़ा और विराट। इसी अर्थ में इस राठ अंचल का अन्यतम बड़ा देवता धर्म ठाकुर - बांकुड़ा राय के नामानुसार बांकुड़ा नामकरण हुआ। एक और मत के अनुसार बीर हम्बीर के एक पुत्र के नामानुसार अथवा एकतेश्वर मन्दिर के बांका लिंग के नाम पर इसका नाम है। 1881 साल को 14 अप्रैल को बांकुड़ा पूर्ण रूप से जिले का दर्जा पाया और मुख्यालय बना बांकुड़ा। बांकुड़ा शहर का विख्यात प्राचीन शिव मन्दिर "भैरव स्थान" स्टेशन आने से पहले ही दृष्टिगोचर होता है। इसके अलावा 1640 ई० में बना पंचरत्न रघुनाथ मन्दिर और गंगाधर शिव का दलान मन्दिर दर्शनीय है। 1880 में WESLIAN MATHODIST MISSIONIARY



मकुटमणिपुर

SOCIETY ने बांकुड़ा में पहली बार चर्च बनाया। 1945 में मौलाना अबुल कलाम आजाद को बांकुड़ा के " गुप्त स्टेट" नामक बगान बाड़ी में दो माह के लिए नजरबंद रखा गया था। बांकुड़ा से तीन कि.मी. दूर एकतेश्वर गाँव में एतकेश्वर अथवा एक पदेश्वर नामक एकपदी शिव मूर्ति पूरे भारत वर्ष में विरल है। मूर्ति का एक पैर और दो हाथ हैं। वेदों में इस मूर्ति का उल्लेख है। इतिहास से पता चलता है कि सामन्तभूम और मल्लभूम राजाओं का राज्यसीमा निर्धारण का विवाद चलता रहता था। एकबार भगवान शिव एकपदी मूर्ति लेकर आविर्भूत हुए और उनके आगमन से राजसीमा का विवाद मिट गया। बहुत समय पहले यह मंदिर टूट गया था वर्तमान मन्दिर 45 फीट उंचा ईंट और बेल पत्थर से निर्मित उड़ीसा की शिखा देउल शैली का है। गाढ़े रंग के मंदिर के भीतर और बाहर पुराणों से उद्धृत मूर्तियाँ और चित्र उत्कीर्णित हैं। चैत्र मास में यहां मेला लगता है और प्रति सोमवार बहुत से तीर्थयात्री यहां आते हैं। बांकुड़ा से सामान्य दूरी पर छोटे कोडो पहाड़ की गोद में बांग्ला के विद्रोही कवि नजरुल इस्लाम की स्मृति से धन्य गाँव अमरकानन की प्राकृतिक शोभा से आकृष्ट हो कर बहुत लोग पर्यटन के लिए आते हैं बिप्लवी गोविन्द प्रसाद द्वारा निर्मित राम कृष्ण आश्रम के उदघाटन के लिये महात्मा गान्धी 1925 में अमरकानन आये थे। 1940 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी भी यहाँ पधारें थे। कोडो पहाड़ के शिखर में सावित्री देवी का मन्दिर और अष्ट भूजा मूर्ति है।

बांकुड़ा से 55 कि.मी. दूरी पर कंसावती और कुमारी नदी के संगम पर भारत वर्ष का दूसरा वृहदतम नदी बाँध (80 Sq. Metre) मुकुटमणिपुर -झिलीमिली अंचल में अवस्थित बांकुड़ा जिला का सबसे आकर्षक पर्यटन केन्द्र है। पहाड़ से घिरे इस जलाशय में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य और चाँदनी की छटा निराली होती है। छातना से मुकुटमणिपुर के बीच रेल पथ का शिलान्यास हो चुका है शीघ्र ही वहाँ रेल सेवा शुरू होगी।

बांकुड़ा का मूल्यवान पुराकीर्ति है वीर स्तंभ - Megalith जो वास्तव में समाधि प्रस्तर है। लम्बे पत्थर के फलक के उपर विविध प्रकार के उत्कीर्ण मानव मूर्ति हाथ में ढाल, तलवार, तीर, धनुष से सुसज्जित दिखाई पड़ते हैं जो प्रस्तर युग का स्मृति स्तंभ का निदर्शन है एवं इस्टर द्वीप का स्मृति स्तंभ के अनुरूप है। बांकुड़ा से 7 कि०मी० दूरी पर भेदुआसोल है।



भेदुआसोल : भेदुआसोल से चार कि.मी. दूरी पर सोनातपन गाँव में 50 फीट उंचा 11 वीं सदी का सूर्य मन्दिर विख्यात है।

ओन्दाग्राम: बांकुड़ा से भेदुआसोल पारकर 9 कि.मी. आगे ओन्दाग्राम स्टेशन है। स्टेशन से तीन कि.मी. की दूरी पर बहुलारा गाँव में दारकेश्वर नदी के किनारे भारत विख्यात सिद्धेश्वर मंदिर है। मध्ययुग के पाल साम्राज्य के समय का यह मंदिर ईंट निर्मित रेखा देउल का एक अच्छा नमूना है। यह उड़ीसा में भुवनेश्वर स्थित एक मंदिर का अनुकरण है। मंदिर के भीतर और बाहर सूक्ष्मनक्काशी, इस मंदिर को और महत्वपूर्ण बनाती है। शिव मंदिर में लिंग के पास ही गणेश, जैन पार्श्वनाथ और महिषासुर मर्दिनी की मूर्तियाँ हैं। चैत्र मास में तीन दिनों तक शिव के गाजन उत्सव में सैकड़ों लोग भाग लेने आते हैं। बहुमत के अनुसार ये मन्दिर बौद्धों का था। ओन्दा थाना का विक्रमपुर गाँव में उड़ीसा शैली का जगमोहन युक्त (जहाँ से मूर्ति दिखता है) गोपाल चाँदजी का मन्दिर बांकुड़ा का गौरव है।

रामसागर : ओन्दाग्राम से 9 कि.मी. दूरी पर रामसागर स्टेशन है। यह स्थान मनसा पर्व मेला एवं नागमाता के लिए विख्यात है। रामसागर में ईंट निर्मित 100 फीट उंचा गोल आकार का चार तल का विशिष्ट मंचान स्तंभ है जो अब जीर्ण अवस्था में है। ब्रिटिश शासनकाल में ओन्दा, छातना, इन्द्रबिल, जयचण्डी में 8 मील की दूरी में स्थित "सीमाफोर" संकेत के माध्यम से वार्ता का आदान-प्रदान होता था। 1851 में टेलीग्राफ आविष्कार होने के पहले Telecommunication की व्यवस्था थी जिसे सीमाफोर कहते हैं। 1813 में कोलकाता फोर्ट विलियम से 350 मील दूर चुनार में Telescope द्वारा रिले प्रक्रिया के जरिये वार्ता संदेश भेजने में 50 मिनट लगता था। पुराने मानचित्र में इसको टेलीग्राफ स्टेशन के हिसाब से चिह्नित किया गया था। रामसागर से 5 कि०मी० दूरी पर विष्णुपुर है।



सीमाफोर

विष्णुपुर : विष्णुपुर स्टेशन, मंदिरों का शहर विष्णुपुर और मल्लराजाओं की भूमि विष्णुपुर। मल्लराजवंश ने यहाँ आठवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी तक राज किया। 1643 ई० में राजा रघुनाथ प्रथम के शासन काल में विख्यात श्याम राय मंदिर का निर्माण हुआ। राजा रघुनाथ सिंह देव द्वितीय के शासन काल में सत्रहवीं शताब्दी के केष्टोराय (कृष्ण) का जोड़ बांग्ला मन्दिर बना। यह टेराकोटा से अलंकृत बंगाल का अद्वितीय मंदिर है। वर्ष 1587 में वीर हम्बीर के समय में महाप्रभु चैतन्य के अनुगामी श्री निवास आचार्य विष्णुपुर आए।

राज्य में वैष्णव धारा का स्रोत बह चला, और उसी समय पक्की ईंटो वाले बांग्ला चाला घर और मिश्र के पिरामिड के समन्वय शैली का रास मंच निर्मित हुआ। यहाँ से रास उत्सव की शोभा-यात्रा का शुभारंभ होता है। 1694 में निर्मित एकरत्न शैली का मदनमोहन मंदिर है जिस में रंगीन पत्थरों से कृष्णलीला, रामायण की कहानियाँ चित्रित की गई हैं। इसके अलावा राधागोविन्द (1721), राधामाधव (1737), कालाचांद (1656), लालजी, सर्वमंगला, छिन्नमस्ता इत्यादि मंदिर एवं दल मादल कमान (1742 में राजा गोपाल सिंह ने 'वर्गी' का प्रतिरोध करने के लिए यह तोप बनवाया), लालबाँध (लालवाई के नाम से) गुमघर (तहखाना) पाथर दरजा (पत्थर का दरवाजा), पत्थर का रथ, इत्यादि उल्लेखनीय एवं दर्शनीय हैं। विष्णुपुर घराना, भारत तथा विश्व के शास्त्रीय संगीत में एक सुविख्यात नाम है। विष्णुपुर की बालुचूड़ी साड़ी भी पूरे भारत में प्रसिद्ध है। इस शिल्प की ढाका के रेशम से तुलना की जाती है। 7 वीं सदी में मुर्शिदाबाद में बालुचूड़ी कला की शुरुआत हुई थी और विष्णुपुर में आकर उसका अपना वास्तविक मुकाम हासिल हुआ। साड़ी के आंचल पर चित्रित रामायण, महाभारत, और पुरुषों के रंग बिरंगे चित्र यहाँ की विशेषता है। वर्तमान में सरकार ने इस कला को कंप्यूटराइज करने का विशेष प्रयास किया है। विष्णुपुर से 10 कि.मी. दूर पांचमुड़ा गाँव में, पक्की मिट्टी या काठ से बना घोड़ा का शिल्प सर्वविदित है। रासबिहारी कुम्भकार को मृदा शिल्प का विश्व प्रसिद्ध बांकुड़ा घोड़ा बनाने के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार (NATIONAL AWARD FOR MASTER CRAFTSMANSHIP) (1969) मिला है। पश्चिम बंगाल सरकार ने इसी घोड़े को कुटीर उद्योग का मोनोग्राम बनाया है।

विष्णुपुर से 8 कि.मी. दूरी पर दीहार में 900 वर्ष पुराना विख्यात शैलेश्वर मन्दिर है। डीहर में कोलकाता विश्वविद्यालय का आठ साल के उत्खनन और अनुसंधान के दौरान यह बात सामने आयी कि यहाँ ३ हजार साल पहले ताम्र सभ्यता का विकास हुआ था। और 43 कि.मी. दूर पर जयरामवाटी एवं कामार पुकुर श्री श्री माँ शारदा एवं श्री रामकृष्ण परमहंस का जन्म स्थल है। श्री श्री माँ शारदा का विश्राम

स्थल स्टेशन में एक वृक्ष के तले सुन्दर ढंग से बनाया गया है। कामार पुर के पास ही स्थित गढ़ मंदारन एक ऐतिहासिक स्थान है जो साहित्य सम्राट बंकिम चन्द्र की स्मृति से धन्य हुआ है। विष्णुपुर स्टेशन को रेलवे ने मॉडल स्टेशन का दर्जा दिया है।

विष्णुपुर से पियारडोबा, बोगरी रोड स्टेशन (बोगरी राजाओं की सीमा इस स्थान तक थी और उसी से ही स्टेशन का नामकरण हुआ।) पार कर हम पहुंचते हैं 25 कि.मी. दूरी पर स्थित गड़बेता स्टेशन।

गड़बेता : शिलावती नदी के तीर पर प्राचीन शहर गड़ अर्थात् नाला से घिरा था अतः इसका नाम गड़बेता पड़ा। वर्ष 1555 से 1610 के बीच चौहान राजवंशी बोगड़ी नामक शक्तिशाली राजा थे - दुर्ग का भग्नावशेष आज भी देखा जा सकता है। गाँव में प्रवेश करते समय हनुमान, पेशा, और लाल नाम वाले तोरण दिखाई देते हैं। बहु प्राचीन मंदिरों में उड़ीसा की शैली में निर्मित सर्वमंगला मंदिर विख्यात है इसकी विशेषता है कि इसका द्वार उत्तरमुखी है। कहते हैं कि उज्जयिनी के योगी महाराज विक्रमादित्य वन में विचरण के समय इस क्षेत्र में अतीन्द्रिय अनुभूति से आकृष्ट होकर मंत्र की सहायता से सर्वमंगला देवी के सामने उपस्थित हुए एवं शव के ऊपर बैठकर तंत्र साधना करने लगा। तप से संतुष्ट होकर देवी ने उन्हें वरदान दिया और ताल बताल की शक्ति प्रदान किया। इसी ताल बताल का शक्तिपरीक्षण करते समय राजा ने मंदिर को उत्तरमुखी होने का आदेश दिया। ऐसा ही हुआ और इसलिए यह मंदिर उत्तरमुखी है। अनेक लोगों के अनुसार ताल बताल से भी गड़बेता नाम की उत्पत्ति है। गड़बेता स्टेशन को भी रेलवे ने मॉडल स्टेशन घोषित किया है।

चन्द्रकोना रोड: गड़बेता से 12 कि.मी. दूरी पर चन्द्रकोना रोड स्टेशन है। इसी नाम से ही स्थान है और इसमें दो मन्दिर हैं। मल्लेश्वर मंदिर 18 वीं सदी का वर्धमान महाराज द्वारा बनवाया हुआ है और 60 फुट ऊँचा है। दूसरा लाल जी मन्दिर है। अनुमानतः वर्ष 1655 में राजा हरिनारायण की रानी लखनवती ने कृष्ण मंदिर बनवाया। उस दौरान निर्मित कामेश्वर शिव और रास मंच अभी भी विद्यमान हैं। चन्द्रकोनारोड स्टेशन को भी रेलवे ने मॉडल स्टेशन घोषित किया है।

शालबनी: चन्द्रकोना रोड से 12 कि.मी. की दूरी पर ऐतिहासिक चुआड़ विद्रोह का साक्षी शालबनी अंचल है। वर्तमान में रिजर्व बैंक आफ इण्डिया के अधीन भारत की नोट मुद्रा का मुद्रण कारखाना यहाँ स्थित है।

गोदापियासल : शालबनी से १२ कि०मी- दूरी पर गोदापियासल से २ कि०मी० दूर बैउचा गाँव में १०० बरस पुराना विजयकृष्ण गोस्वामी के शिष्य क्षेत्रमोहन मुखर्जी द्वारा निर्मित रामसीता का मंदिर सुप्रसिद्ध है। स्टेशन से दक्षिण पूर्व पाँच मील दूरी पर रानीगंज रोड पर चुआड़ विद्रोह में शामिल कर्णगढ़ की रानी शिरोमणि का क्षेत्र है। इसी शिरोमणि का नामनुसार एक ट्रेन आदरा से हावड़ा तक जाती है। तीन सौ साल पुराना देवी महामाया का मन्दिर यहाँ का जागृत स्थान है। आदरा-मेदिनीपुर शाखा की यात्रा यहाँ समाप्त होती है।

बाँकुड़ा - दामोदर रेलवे (बी डी आर)

बी डी आर नैरोगेज रेल पथ छोटी लाइन 1916 -17 साल में शुरू हुआ - बाद में 1996 साल में यह बन्द हो गया। बाद का इतिहास बड़े संघर्ष का है। इस अंचल के मनुष्यों की मांग देखकर वर्ष 2005 में रेल मंत्री ने बड़ी लाइन का उद्घाटन किया। अब हम बाँकुड़ा से बाँकुड़ा दामोदर रेलवे की लाइन पकड़कर पात्रसाएर और सोनामुखी की ओर चलेंगे। बाँकुड़ा से 3 कि.मी. की दूरी पर बिकना है।

बिकना : सुदूर अतीत में पीतल और ताँबा से विशेष प्रक्रिया से निर्मित दीपक, मूर्ति, अलंकृत वस्तु बनाने वाले कारीगर मध्य प्रदेश से बिकना आये। वहाँ पर इन्होंने ढोकरा शिल्प का शिल्प डांगा गठित किया। इसी समुदाय के युद्ध कर्मकार को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है।

छांदार : बिकना से 19 कि.मी. की दूरी पर छांदार स्टेशन के नजदीक पांचाल गाँव का प्राचीन प्रसिद्ध पोखर परसा और गाँव की अधिष्ठात्री देवी परसासीनी विख्यात हैं। उसी पोखर से देव-देवियों की प्राचीन मूर्तियाँ मिली हैं। बिकना से 22 कि.मी. की दूरी पर वृन्दावनपुर स्टेशन है जहाँ राय का गाजन प्रसिद्ध है।

सोनामुखी : बाँकुड़ा से 40 कि.मी. दूरी पर सोनामुखी स्टेशन है। सोनामुखी क्षेत्र, सत्रहवीं सदी में तांती लोगो का गाँव नाम से संबोधित होता था। ईस्ट इण्डिया कंपनी के शासन काल में यह सूती, सिल्क, लाखा और नील की खेती का वाणिज्य केन्द्र था। सोनामुखी नाम स्वर्णमुखी देवी से आया है। काले पत्थर से निर्मित देवी की मूर्ति, शहर के बीच ईंट के ढालान मंदिर में पूजित होती हैं। बाजार पाढ़ा में पश्चिम मुखी, बाँकुड़ा जिला का एक मात्र पच्चीस रत्न मंदिर देखा जा सकता है। श्रीधर मंदिर वर्ष 1845 में विख्यात व्यवसायी कनाई रुद्र ने हरिसूत्रधर नामक शिल्पी से बनवाया। टेराकोटा शिल्प के अनन्य उदाहरण इस मंदिर में शालिग्राम की पूजा होती है। इसके अलावा बाबू पाढ़ा का गोविन्द मंदिर मंगल चण्डी ढालान मंदिर गोविन्द जी रासमन्दिर, मनोहर दास ढालान मंदिर, गोपीनाथ ढोल मंच, श्याम सुन्दर का मन्दिर, 1835 का पश्चिम मुखी गिरि गोवर्धन देउल शिव मंदिर, सिद्धेश्वर शिवमंदिर एवं हरनाथ कुसुमकुमारी मंदिर विख्यात हैं।

धगरिया : सोनामुखी से 11 कि.मी. की दूरी पर धगरिया स्टेशन के उत्तर दिशा में हदल नारायणपुर गाँव में जीर्णशीर्ण ब्राह्मण्य देवी का पंचरत्न मन्दिर और देवी दुर्गा का मन्दिर है जहाँ मूर्ति के पाँचों ओर अग्नि प्रज्वलित रहता है। ये दोनों मन्दिर पाल युग में निर्मित हैं।

पात्रसाएर: सोनामुखीसे पात्रसाएर तक 16 कि.मी. रेल पथ का उद्घाटन वर्ष 2007 में हुआ। पात्रसाएर के विख्यात मंदिरों में कालंजय शिव का देउल मंदिर बाँकुड़ा का अनन्य मंदिर है। कुछ पत्थर की मूर्तियाँ उस मंदिर के आस-पास पड़ी हैं। घोषाल पाढ़ा में आठचाला

रघुवीर मंदिर, माँ काली दालान मंदिर, आठचाला श्रीधर मंदिर विख्यात है। चन्दनतला में दुर्गा मण्डप दालान मंदिर, आठचाला दामोदर मंदिर, दास पाढ़ा का आठ चाला राधा दामोदर मंदिर सुप्रसिद्ध है।

आढ़ा से अब हम आढ़ा - चाण्डिल शाखा में पुरुलिया - बलरामपुर पार कर मंडल के दक्षिण पश्चिम की ओर झारखण्ड के सिंहभूम जिले के चाण्डिल नामक स्थान की ओर चलेंगे। हमारे भ्रमण पथ का पहला स्टेशन 6 कि.मी. दूरी पर **गढ़धुबेश्वर** है। पंचकोट राजकुमार धुबेश्वर के नाम से इस स्टेशन का नाम है लेकिन यहाँ कोई किला या महल नहीं मिला है।

अनारा : परवर्ती स्टेशन 6 कि.मी. आगे अनारा स्टेशन है। अनारा वानेश्वर शिव मंदिर के लिए विख्यात है। वानेश्वर शिव इस अंचल के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। सावन मास में बहुत से लोगों का समावेश यहाँ होता है।

आनारा में सात-आठ सौ बरस पहले रामसरन नामक एक गोप को अलौकिक रूप से एक काला पत्थर खंड प्राप्त हुआ। उसने स्वप्न देखा और स्वप्न की प्रेरणा से आदिबान लिंग, बानेश्वर शिव की स्थापना कराया। परवर्ती समय में पातकुम क्षेत्र में आदित्य कुलोदभव, इचागढ़ राजा शत्रुघ्नादित्य ने देवघर वैद्यनाथ शिव के दर्शन को जाते समय सपना देखा। एवं उसकी प्रेरणा से सुन्दर कलाकृति युक्त ईंट निर्मित मंदिर बानेश्वर शिव के लिए बनवाया। आज यह बानेश्वर धाम के रूप में प्रसिद्ध है।

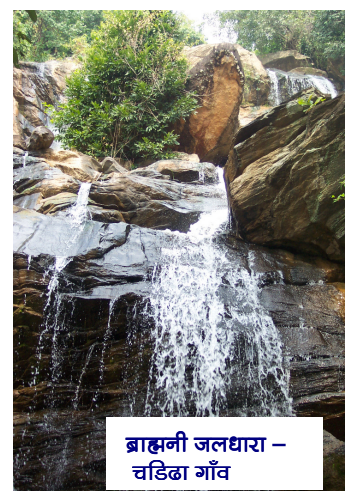


अनारा बानेश्वर शिव मंदिर

बगलिया: आगे 6 कि.मी. बगलिया स्टेशन के पास जंगल में बगाल ठाकुर का मंदिर है जो पाड़ा के राजा ने बनवाया था। इन्हीं बागाल ठाकुर के नाम से बगलिया का नाम पड़ा। कहते हैं पाड़ा गाँव में रुक्मिणी देवी के शर्त के अनुसार रोज एक मनुष्य को उनके खाद्य के रूप में राजा पहुँचाता था। देवी उसे ढँकी से कूटती थी। इन देवी को एक चरवाहे बालक ने साहस और बुद्धिमता से पाड़ा से धलभूमि की ओर खदेड़ दिया। बागलिया में उसी बालक का मन्दिर है। बगलिया से 1 कि.मी. दूर सिंदूर पुर गाँव में पहाड़ से दारकेश्वर नदी निकलती है। इस गाँव में पंचकोट राजकुमार दारुकनारायण ने दारकेश्वर शिव की स्थापना की। शिव के नाम से ही दारकेश्वर नदी है। यह नदी इस स्थान से निकलकर काशीपुर - बाँकुड़ा होकर रुपनारायण नदी में समा जाती है। इस नदी का जल ही परिशोधित कर आढ़ा में सर्वत्र आपूरित होता है।

छर्छा: बगलिया के बाद कुस्तौर पार कर 13 कि.मी. की दूरी पर छर्छा स्टेशन है। छर्छा नामकरण के साथ बंदूक की गोली का संबंध है। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय छर्छा एक सैन्य कालोनी और हवाई अड्डा था। वर्तमान में यहाँ 11 वीं बटालियन का सैन्य शिविर है। नवीं एवं दसवीं सदी में यहाँ जैनों का विशिष्ट तीर्थ रहा है। कहा जाता है कि बहुत पहले चौबीसवें तीर्थंकर महावीर यहाँ कभी आए थे। इस गाँव में दो रेख देउल थे। दोनों में अब कोई विग्रह (मूर्ति) नहीं है और दोनों ही परित्यक्त हैं। छर्छा में धर्मराज की पूजा सुप्रसिद्ध है और धर्म मन्दिरों में असंख्य जैन मूर्तियाँ दिखाई देती हैं। इसके अलावा भग्न वासुदेव मंदिर में शालिग्राम की पूजा होती है।

पुरुलिया : छर्छा के सात कि.मी. आगे पुरुलिया जंक्शन और जिले का मुख्यालय शहर पुरुलिया है। जैन "भगवती सूत्र" से पता चलता की पाँचवी सदी में पुरुलिया, 16 महाजनपदों में अन्यतम - बज्रभूमि नाम से सुविख्यात था। वर्ष 1805 में यह जंगलमहल प्रांत में शामिल हो गया। 1833 में जंगल महल जिला के वटवारे से मानभूम जिला बना और मुख्यालय हुआ मानबाजार। 1838 में जिला मुख्यालय पुरुलिया में स्थानांतरित होकर आ गया। बाद में 1956 में 1 नवम्बर को मानभूम का बटवारा कर पुरुलिया जिला बना। प्राचीन समय में बंगाल से उड़ीसा जाने के लिए पुरुलिया से ही पुरी तक का तीर्थ यात्रा मार्ग था एवं पुरुलिया के जलमार्ग से व्यवसाय होता था। मानभूम के स्वतंत्रता आंदोलन में ऋषि निवारण चन्द्र ने प्रमुख भूमिका निभायी थी एवं उनके बुलाने पर देशबन्धु चितरंजन दास, एवं नेताजी इस शहर में आए थे। पुरुलिया का रामकृष्ण मिशन विद्यापीठ जिले के स्कूलों में प्रमुख एवं दर्शनीय स्थले है। जिला विज्ञान केन्द्र, एवं हरिपद साहित्य मंदिर जिले में विज्ञान एवं साहित्यचर्चा को बटाने में अग्रणी भूमिका निभाया है। पुरुलिया से 25 कि.मी. दूर पाकाविड़रा ग्राम है। जैन सभ्यता का बहुत से नमूने पूरे गाँव में फैले हैं। पुरातत्वविद जे.डी.बेग्लर के अनुसार यहाँ की पाँच फुट ऊँची बहुबलजी मूर्ति सारे उत्तर भारत में विरल है। वर्तमान में भैरोनाथ के नए रूप में इनकी पूजा हो रही है। यहाँ बहुत मूर्तियाँ हैं जिन में कुछ मूर्तियाँ 2000 वर्ष से भी पुरानी हैं। पाकविड़रा से 11 कि.मी दूर कंसाई नदी के किनारे हुडा रोड पर बुधपुर गाँव में 25 फुट ऊँचा विशाल शिवमंदिर है। 12 वीं से 13 वीं सदी का प्राचीन, पत्थर निर्मित असाधारण सौन्दर्य एवं जाग्रत देवता बुद्धेश्वर का मन्दिर है।



ब्राह्मनी जलधारा - चडिडा गाँव

कांटाडीह : स्टेशन के पास बेड़ादा गाँव में एक प्राचीन शिव मन्दिर का इतिहास मिलता है।

बराभूम: पुरुलिया से टामना, कांटाडीह और उरमा को पार कर 32 कि.मी. की दूरी पर बराभूम आता है। जैन तीर्थंकर महावीर धर्मप्रचार के लिए सांफा राज्य में आए थे। एवं सत्रहवीं शताब्दी में हिउयेन साँग साँफा से गुजरा। इस सांफा राज्य की राजधानी बराभूम या बलरामपुर के बड़ा बाजार क्षेत्र में थी। सुवर्ण रेखा नदी के तीर पर बराभूम राजवंश की राजधानी के ध्वंसावशेष एवं अनेक जैन मंदिरो का इतिहास है। बराभूम से बाघमुण्डी होकर 34 कि.मी. की दूरी पर पुरुलिया जिला का अन्यतम पर्यटन स्थल अयोध्या पहाड़ है। सर्वोच्च शिखर गर्गाबुरु 677 मीटर ऊँचा है। पुरुलिया से 40 कि.मी. दूर सिरकाबाद के रास्ते भी इस पहाड़ पर जाया जा सकता है। यह जिले में पर्वतारोहण और ट्रेकिंग का आदर्श स्थान है। पहाड़ी नदी को परकर सीढ़ियों से उतरते हुए ब्राह्मनी जलधारा का दृश्य मनोहारी है। कहते हैं सीता के साथ बनवास के दौरान इस अंचल से गुजरे। सीता जी को प्यास लगने पर रामचन्द्रजी ने धरती में तीर मारा। माटी से जलधारा फूट पड़ी और सीता जी ने प्यास बुझाई। इसी कारण जलकुण्ड का नाम सीताकुण्ड पड़ा। वैशाखी पूर्णिमा के दिन यहाँ की उपजातियों का प्रधान उत्सव 'शिकार' होता है। यहाँ पर बांध बनाकर 900 मेगावाट की जलविद्युत परियोजना शीघ्र ही चालू होगी। अयोध्या पहाड़ से समतल भूमि में आते समय छऊ नाच के विख्यात नर्तक गंभीर सिंह मुड़ा की जन्मभूमि चड़िडा गाँव दिखाई देता है - यह छऊ नृत्य का मुखौटा बनाने का आदि स्थल है। विभिन्न रंग के मुखोटे यहाँ तैयार होते हैं और भारत तथा विश्व बाजार में बिकते हैं। चड़िडा से चलकर बाघमुण्डी शहर पहुँचते हैं। 1773 ई० में निर्मित बाघमुण्डी राजा की राजबाड़ी, टेराकोटा शिल्प शैली में निर्मित सधा गोविन्द का छाता मन्दिर एवं विशेष आकृति का रासमंच तथा पंच रत्न शिवमन्दिर दर्शनीय है।



नीमडीह: बराभूम से और दक्षिण की ओर झारखण्ड के सिंहभूम जिला में नीमडीह स्टेशन है। यहाँ सीमागुण्डा नामक जगह पर जैन मंदिर दिखाता था और यह एक जैन तीर्थ क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध था।

चाण्डिल: आगे 7 कि.मी. पर इस शाखा का अंतिम स्टेशन चाण्डिल है। इस अंचल की पहाड़-आवृत सुवर्ण-रेखा नदी के किनारे जैन सभ्यता के स्थापत्य के नमूने बहुत समय तक थे लेकिन नदी में बाँध बनने के वक्त बहुत सा भाग विलुप्त हो गया। कुछ जैन स्थापत्य का नमूना चाण्डिल में एक संग्राहलय में रखे गये हैं।

पुरुलिया से अब हम गढ़ जयपुर के रास्ते बोकारो की ओर चलेंगे।

गौरीनाथधाम: स्टेशन से कुछ दूरी पर चास मोड़ होकर पाँच कि०मी० दूरी पर चिड़का गाँव में इस अंचल का सबसे प्रसिद्ध शिव क्षेत्र गौरीनाथ धाम है। २०० बरस पहले काली साधक चड़कमुनी जंगलों से घिरे स्थान में तपस्या करते थे। इनके नाम से गाँव का चिड़का नाम पड़ा। बाद में हुलका गाँव के गौरीनाथ महतो को अलौकिक रूप से शिवलिंग के दर्शन हुए शंकर भगवान के स्वप्नादेश एवं प्रेरणा से महतो ने एक सुन्दर मन्दिर बनवाया। परवर्ती समय में काशीपुर महाराज एवं काशीपुर के कुछ क्षणों ने इस मंदिर को बृहद एवं भव्य रूप दिया। पहले इस स्टेशन का नाम आइ-मण्डी था - जब यहाँ नैरोगेज था बाद में शिव की कृपा से यहाँ स्टेशन मास्टर के मूक पुत्र को वाक शक्ति प्राप्त होने पर स्टेशन मास्टर के प्रयासों से इस स्टेशन का नाम गौरीनाथ धाम पड़ा।



गढ़जयपुर: गौरीनाथधाम से चास रोड होकर अगला स्टेशन गढ़जयपुर है। इसके चार मील (6 KM) दक्षिण कंसावती नदी के तीर पर देउल घाटा मंदिर क्षेत्र है जो बेगलर के अनुसार नवीं या दसवीं सदी का है। भूतकाल में बोड़ाम नाम से प्रसिद्ध इस स्थान में विग्रहहीन तीन मंदिर का ध्वंसावशेष दिखाता है। इनमें सबसे बड़ा 60 फुट ऊँचाई का है। इसके अतिरिक्त नदी किनारे की कुटीर में शिव, दुर्गा, विष्णु एवं तीन अंशों में विभाजित शिव की मूर्ति दर्शनीय है। मन्दिर और मूर्तियों को देखकर अनुमान कर सकते हैं कि ये सब पाल युग में निर्मित है और सर्वधर्म मतों के सम्मिश्रण यहां हुआ था। इस क्षेत्र के संरक्षण के लिए सरकार और स्थानीय लोगों ने विशेष प्रयास किया है।



कोटशिला: गढ़जयपुर से 26 कि.मी. की दूरी पर कोटशिला स्टेशन है। पुरुलिया जिला की प्रधान नदी कंसावती की उत्सव भूमि कोटशिला में है एवं उत्सव के मैदान में तेरहवीं सदी निर्मित मंदिर क्षेत्र का ध्वंसावशेष दिखाई पड़ता है। कोटशिला के पास ही

बेगुनकोदर में उड़ीसा से 1683 में आया हुआ राजवंश का राजवाड़ी, परिखा एवं वैष्णवधर्मावलम्बी राजा रत्न सिंह द्वारा निर्मित गोपीनाथ जी का मन्दिर, रसमंच और रासमेला विख्यात था। गोपीनाथ जी का मन्दिर अभी संस्कारित हुआ है। बेगुनकोदर अतीत में एक रेल स्टेशन हुआ करता था। अब उसे हटा लिया गया है।



पुन्दाग: कोटशिला से 12 कि.मी. दूरी पर पुन्दाग स्टेशन है। यहाँ महात्मा प्रभात सरकार द्वारा प्रवर्तित आनन्दमार्ग का मुख्यालय आनन्द नगरी है।

बोकारो स्टील सिटी: पुन्दाग से 16 कि.मी. उत्तर में आद्रा मंडल का एक मात्र प्रथम श्रेणी का स्टेशन बोकारो स्टील सिटी है। बोकारो स्टील सिटी प्लांट के लिए यह विख्यात है। इस अंचल पुराना नाम माराफारी था। अंचल खून एवं डकैती के लिए कुख्यात था। डर से कोई इधर नहीं आता है। बाद में कारखाना बनने से हालात बदले। बोकारो स्टील प्लांट 60 के दशक में स्थापित हुआ था। पहले यहाँ माराफारी रेलवे स्टेशन था। उन दिनों एक मात्र सवारी गाड़ी आसनसोल -हटिया चलती थी। बोकारों के बालीडीह में प्राचीन माराफारी की जमींदारों का प्रसिद्ध कुल देवी चंचालनी देवी का मंदिर है। बोकारो स्टील प्लांट के सेक्टर -2 में सबसे प्राचीन एवं प्रसिद्ध राम मंदिर है। सेक्टर -4 में 1976में स्थापित बुद्ध विहार इस अंचल के बौद्धों का तीर्थ क्षेत्र है। इसके अलावा जवाहर लाल नेहरू पार्क और उसके सामने पुरी के गोवर्द्धन पीठ के मंदिर की शैली का जगन्नाथ मंदिर है। यहाँ अधिक संख्या में लोग आकृष्ट हुए आते हैं। रेल स्टेशन से २-३ कि.मी. दूरी पर गरगा सनसदी के उपर गरगा डैम पानी संग्रह का मुख्य स्थान एवं प्रसिद्ध पिकनिक स्थल है। बोकारो स्टेशन से 40 कि.मी. की दूरी पर राजरप्पा का छिन्न मस्तिका मंदिर पूरे पूर्वांचल क्षेत्र में मातृ आराधना का शक्ति पीठ है। द्रविड शैली में कोणार्क मन्दिर के अनुकरण में बने इस मंदिर के बारे में सुकुमार बसु (पुरातत्त्वविद) ने बताया है कि यह 6000 वर्ष से भी प्राचीन है। महाभारत काल एवं इसवी सन् के मध्य काल में इसकी स्थापना हुई थी। 1200 साल पहले यहाँ शंकराचार्य आए थे एवं वर्ष 1600 ई.में महाप्रभु चैतन्य भी यहाँ आ चुके हैं। छिन्नमस्ता माता 17वीं सदी में स्थानीय संथालों की आराध्य थीं। छोटानागपुर के राजा रज संग्राम सिंह एवं उनकी पत्नी रुक्मा इया रप्पा ने संतान प्राप्ति के लिए घनघोर तपोवन में स्थित मां छिन्नमस्तिका की पूजा की। उनकी आराधना सफल हुई। और तत्पश्चात इन दोनों के नाम से ही रज+रप्पा से ही यह स्थान रजरप्पा ख्यातिलब्ध हुआ। दामोदर एवं भैरवी नदी के संगम पर घनघोर जंगल में मनोरम परिवेश में स्थित यह मंदिर पश्चिम बंग एवं झारखण्ड के हर तरह के मातृसाधकों के लिए पूजा एवं भ्रमण का केन्द्र युगों से बना हुआ है।



अब हम अंतिम शाखा आद्रा-गोमो की ओर चलेंगे - भोजपूडीह, भागा, महुदा होते हुए खानूडीह की ओर।

साँका: आद्रा से 7 कि.मी. दूर साँका स्टेशन है। साँका के पास नपाड़ा गाँव में सुआरडी कालीबाड़ी इस क्षेत्र का प्रसिद्ध मातृमंदिर है। साँका गाँव में एक बड़ा तालाब है जहाँ एक बुद्ध मूर्ति मिला है और बहुत सारी जैन धर्म के चिह्न मिले थे जिन्हें पुरातत्त्व विभाग ने अपने संरक्षण में ले लिया।

रुकनी: 8 कि.मी. आगे रुकनी स्टेशन है। इस स्टेशन की परिधि में कई किलोमीटर तक मंदिर एवं मंदिर क्षेत्र है। रुकनी स्टेशन के पास रुकनी काली बाड़ी अति प्राचीन मंदिर है। रुकनी से ६ किलोमीटर की दूरी पर बड़ा गाँव मौतोड़ है। यहाँ की कालीबाड़ी पुरुलिया जिला एवं झारखण्ड के लोगों के लिए भी पीठस्थल है। मंदिर तीन चार सौ वर्ष पहले एक तांत्रिक ने बनवाया। कालीपूजा के समय यहाँ हजार से अधिक भैंस एवं बकरी की बलि होती है। तीन दिन तक विराट मेला लगता है। मौतोड़ से 3 कि.मी. दूरी पर चिलियामा गाँव है। सूदूर अतीत में समस्त उत्तर पूर्व भारत के साथ उड़ीसा का वाणिज्य पथ चोलीयामा से 7 कि.मी. दूर स्थित तेलकम्पी बन्दर गाह था। पंचकोट राज ने यहाँ कई मन्दिर स्थापित किए। पुरुलिया जिला का सबसे अलंकृत टेराकोटा का राधामाधव मन्दिर यहीं अवस्थित है। मन्दिर के बाहरी दीवाल पर राम-रावण युद्ध, देवी चण्डी युद्ध, राधाकृष्ण लीला इत्यादि टेराकोटा चित्रों को देखकर आदमी अवाक हो जाता है। इसके अलावा दुर्गा मन्दिर एवं रामचन्द्र मंदिर तथा काशीपुर राज परिवार द्वारा निर्मित महामाया गजारुद्ध अष्टभुजा दुर्गा देवी का मंदिर है। चेलीयामा से 7 कि.मी. दूर पुरुलिया का सबसे प्राचीन तेलकम्प राज्य की राजधानी थी। राजा के रूप में एक मात्र रुद्रशेखर का नाम ज्ञात है।



जे0डी0 बेगलर के मतानुसार इतने अधिक, इतने सुन्दर मन्दिर छोटानागपुर अंचल में कहीं और नहीं थे। इन्होंने 20 मन्दिरों के बारे में बताया है जो दशम से सत्रहवीं सदी के बीच हिन्दू प्रभाव वाले ब्राह्मण युग में बने थे। तीन बड़े मन्दिरों में एक भैरवनाथ, एक काली माता और एक पार्वती देवी का था। बीसवीं शताब्दी के प्रथमार्ध तक यहाँ भोग राग और पूजा होती थी। डी.वी.सी. का डैम बनने के बाद तेलकूपी के अधिकांश मंदिर जल में निमज्जित हो गए। लेकिन पानी कम होने पर गुरुडी गाँव से दो मंदिर दिखाई देते हैं। कुछ डूबे हुए मंदिरों की मूर्तियाँ गुरुडी गाँव में हैं। लोग कहते हैं - तेलकूपी बन्दरगाह से जो व्यवसायी व्यापार करते थे, उन्होंने ही इन मन्दिरों का निर्माण कराया कुछ कहते हैं कि शिखर वंशी राजा इनके स्रष्टा थे। चेलियामा से 1½ कि.मी. दूर बांदा गाँव जंगल के बीच नदी

के पास खुदाई के पत्थरों से निर्मित पीले लंग की 60 फुट ऊँची देवमूर्ति हीन बांदार मंदिर है। रुकनी से 5 कि.मी. की दूरी पर पाड़ा गाँव है। 962 में गढ़पंचकोट से पहले यहाँ पंचकोट राजाओं की राजधानी थी। ऐसा ज्ञात हुआ है कि पंचकोट राजाओं से पहले यहाँ मानराजाओं का शासन था। यहाँ गाँव में तीन प्राचीन मंदिर हैं। उड़ीसा जाते समय अकबर के सेनापति मानसिंह के सहयात्री पुरुषोत्तमदास ने चिलियामा के मंदिरों का संस्कार किया था। नवीं-दसवीं सदी में निर्मित मंदिरों में चतुर्भुजा देवी चण्डी का ईंटों का एक मंदिर है। दूसरा पत्थरों का लक्ष्मी मंदिर है एक और राधारमण मंदिर था।



संतालडीह: रुकनी से 8 कि.मी. की दूरी पर संतालडीह स्टेशन है। यह ताप-विद्युत संयंत्र के लिए विख्यात है।

भोजूडीह: संतालडीह से 7 कि.मी. आगे गोवाई नदी पारकर झारखण्ड के बोकारो जिले में अगला स्टेशन आता है भोजूडीह। भोजूडीह स्टेशन से 1½ कि.मी. दक्षिण एक प्रसिद्ध मंदिर है भैरवधाम। 1500 ई में सप्तादृष्ट होकर कंचन ठाकुर ने महाकाल के भग्न मूर्ति को इजरी नदी से प्राप्त करके प्रतिष्ठित किया। भैरवधाम की आदमकद काले पत्थर की बारहवीं शताब्दी की मूर्ति यहाँ विराजित है इसके साथ वर्तमान में कई देव देवियों के मंदिर बने हैं। यहाँ एक शिव कुण्ड है इसके 20 फीट नीचे इजरी नदी और 20 फीट ऊपर कृषि योग्य भूमि है ज्येष्ठ की गर्मी में जब ये दोनों सूख जाते हैं तब भी कुण्ड की अजस्र धारा अहर्निश बहती है। ऐसी मान्यता है कि अज्ञातवास के समय पाण्डव यहाँ आए थे। माता कुंती को प्यास लगने पर अर्जुन ने तीर संधान कर धरती से जलस्रोत निकाला। वही है यह शिवकुण्ड। आस पास घना जंगल है। यहाँ गोवाई, इजरी एवं दामोदर नदियां एक दूसरे में मिल जाती हैं। बनवास के लिए यह स्थान उपयुक्त रहा होगा। मूर्ति की प्राचीनता, शिवकुण्ड का उत्स, बनवास की अवधारणा एवं वर्तमान में जन-जन की इस स्थान के प्रति अक्षुण्ण आस्था इस तथ्य को बल देती है कि ईश्वर यहाँ कण-कण में विराजित हैं।



सुदामडीह: भोजूडीह से दामोदर नदी पार कर 01 कि.मी. की दूरी पर धनबाद जिले में सुदामडीह स्टेशन है। इस अंचल में विख्यात मंदिर चासनाला का कल्याणेश्वरी माता मंदिर है। यह बहुत पुराना मंदिर है यहाँ से कुछ दूर कातरास में और एक कल्याणेश्वरी माँ है जो नीलकण्ठवासिनी के नाम से विख्यात है और वहाँ की कल्याणेश्वरी की छोटी बहन इनको माना जाता है।

भागा: सुदामडीह के आगे भौरा और जामाडोबा के बाद भागा स्टेशन आता है। इसके नजदीकी शहर झरिया और धनबाद हैं। यह क्षेत्र पूर्ण रूप से बी.सी.सी.एल का कोयला खदान क्षेत्र है। यह मंडल का मुख्य कोयला लदान क्षेत्र है। झरिया का राज कालेज मानभूम का सब से पुराना कालेज है। यहाँ का राजबाड़ी भी प्रसिद्ध है।

भोजूडीह से बोकारो जाने के लिए एक रेल मार्ग है। इस रास्ते में भोजूडीह के बाद 61 कि.मी. की दूरी पर आता है **शिववाबूडीह**। इसका नामकरण शिव बाबू का डीही पर आधारित है।

तलगडिया : अगला स्टेशन तलगडिया है जो 61 कि.मी. आगे है। यहाँ अति प्राचीन सती मंदिर है। तलगडिया में बहुमूल्य कोयला भंडार एवं मिथेन गैस का अकूत भंडार मिला है। इसलिए इस क्षेत्र का महत्व बढ़ गया है।

महुदा: तालगडिया से 11 कि.मी. आगे महुदा स्टेशन है। प्रायः सौ बरस पहले जब महुदा में रेल लाइन बिछाई जा रही थी - एक अद्भुत घटना घटी। जितनी बार लाइन बिछायी जाती थी एक विशेष स्थान पर टेढ़ी हो जाती थी। तत्कालीन इंजीनियर ने भी इस घटना को देखा। अंत में वहाँ के प्रसिद्ध बरहम(ब्रह्म) बाबा ने स्थानीय लोगों को स्वप्न दिखाया कि लाइन उनके स्थान से कुछ दूर घुमाते हुए ले जायी जाय। ऐसा ही हुआ - लाइन को पहाड़ काटकर घुमा कर ले जाया गया। वहाँ अब बरहम बाबा का मंदिर है और रेल लाइन के एक टुकड़े पर नारियल फोड़कर उनको अर्पित किया जाता है, वे यही पूजा स्वीकारते हैं।



बरहम(ब्रह्म)बाबा

जमुनिया टांड : महुदा से दामोदर नदी पार करते हुए ८ कि.मी. की दूरी पर जमुनिया टांड के पास जमुनिया नदी के तीर पर 1975 ई. में विख्यात जलेश्वर देवी का मंदिर है।

दुग्धा: जमुनिया टांड से 3 कि.मी. दूर दुग्धा हाल्ट है। यहाँ दुग्धा पहाड पर देव नगरी "मइया धाम" अवस्थित है। एक सिद्ध साधक को देवी का दर्शन हुआ। इसी आधार पर अष्टभुजा तदनंतर सोलह भुजा देवी की स्थापना पहाड पर एक सुंदर जगह में हुई। इसी मार्ग में राजाबेडा स्टेशन में दामोदर नदी के असाधारण प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए विख्यात पिकनिक स्थल है। यहाँ एक पहाडी नदी है जो बहुत गहरे बहती है कई गुफाएं, सुरंग और गहरा कुआँ है। मकर संक्रान्ति के दिन यहाँ मेला लगता है।

तुपकाडीह : बोकारो आने से पहले तुपकाडीह स्टेशन आता है। यहाँ महादेववर नाथ शंकर का मंदिर है। सौ बरस पहले शिवलिंग स्वतः उद्भूत हुआ था। यहाँ दूध की तरह की एक धारा बहती है इसलिए यहाँ शिव को दूधलिंगी भी कहते हैं।

चास:चास स्टेशन से एक कि०मी० की दूरी पर बाबामनि श्रीश्रीस्वरूपानंद परमहंस जी का मल्टीवर्सिटी पुपुन्की आश्रम है। बाबामनि ने १९३२ में हरिहर मिश्र एवं दीनानाथ मिश्र का दान दिया १२०० बिघा जमीन पर यह स्वावलंबी विद्यापीठ किया। सत्य एवं ब्रह्मचर्य के सिद्धान्तों पर स्थापित इस विद्यालय में स्कूली शिक्षा के अलावा कर्मक्षेत्र में खड़े होने की शिक्षा भी दी जाती है।

यहाँ से कुछ ही दूर राष्ट्रीय राजमार्ग से ३२ पर काला पत्थर स्थान में बाबा मगनदास के समाधि स्थल पर बाबा भूतनाथ जी का मंदिर छः दसक पुराना है। इस रास्ते से गुजरने वाली हर गाड़ी बाबा के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने के लिए कुछ क्षणों के लिए रुकती है।



आद्रा : सबसे अन्त में आद्रा पर आते हैं। बहुत पहले यहाँ संधालों का 45 टोला था। ब्रिटिशों ने इन टोलों

का हटाकर वर्तमान रेलवे के यार्ड और कार्यालयों को स्थापित किया। आज जहाँ पोस्टमास्टर रहते हैं वहाँ काशीपुर राजा का प्रमोद भवन था। बाद में यह डाक घर हो गया और फिर स्थानान्तरित हो गया। आद्रा का पहला स्टेशन डाउन डिस्पैच यार्ड के पास था और इसका नाम तब आड़रा। सन् 1913 में काशीपुर राजा ज्योति प्रसाद सिंह देव के सहयोग से निर्मित बेंको नदी का पुल के उद्घाटन के लिए बिहार एवं उड़ीसा का लेफ्टिनेट गवर्नर एच एच सार चार्ल्स बैले आद्रा स्टेशन के ओवर ब्रिज से साउथ साइड में उतरा था। सन् 1939 में नेताजी सुभाष बोस भी जब मानभूम में इस क्षेत्र को संबोधित करने आये थे तो यहीं ओवरब्रिज के नीचे दक्षिण दिशा में उनको सम्मानित किया गया था।

आद्रा के उत्तर में विख्यात मंदिरों में 100 वर्ष पुराना कमला स्थान सर्वविदित एवं प्राचीन है। ब्रिटिश शासन काल में रेल कर्मचारियों द्वारा स्थापित किया गया आद्रा के उत्तर दिशा में अवस्थित श्री राम मंदिर लगभग सौ वर्ष पुरानी है। यहाँ भगवान के सभी रूपों की पूजा की जाती है। वर्तमान समय में इस मंदिर के प्रांगण में 51 फुट ऊँची महावीर बजरंग बली की प्रतिमा का निर्माण किया गया है जो कि पश्चिम बंगाल के अबतक की सबसे बड़ी प्रतिमा है। इसके अलावा निगमानंद ठाकुर का मंदिर और स्कूल एवं आश्रम है। दक्षिण में प्राचीन चर्च, साहेब बांध एवं स्वर्ण जयन्ती पार्क है। आद्रा से तीन कि.मी. दूर आड़रा गाँव में 700 साल पहले शिवराम गोस्वामी द्वारा निर्मित रघुनाथ मंदिर एवं मदनगोपाल मंदिर है। यहाँ से 9 कि.मी. दूर काशीपुर पंचकोट राज का विख्यात राजप्रसाद एवं देवी मंदिर दर्शनीय है। दुर्गापूजा के समय राजबड़ी दर्शकों के लिए खोल दी जाती है। आद्रा के लगभग 100 वर्ष पुराने एक रेल क्वार्टर को विरासत भवन घोषित किया गया है। इसमें रेलवे और आद्रा रेल मंडल से जुड़ी ऐतिहासिक वस्तुओं को रखा गया है। 2007 में दक्षिण पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक श्री वी.के. रैना ने इसका उद्घाटन किया।



५१ फुट ऊँची महावीर बजरंग बली



कमला स्थान

RESOURCES: BOOK: 'PURULIAR MANDIR'-DILIP GOSWAMI,'EK NAJARE BANKURA'-SHRAMIK SEN, PASCHIMBANGA (BANKURA SANKHYA), BOKARO: DIPAK SAWAL, WEBSITE: PURULIA.GOV.IN, TEMPLENET.COM, BANKURAONLINE.COM, HELP: DEBIPRASAD CHAKRABORTY, BARUN BOXI, K.A.DASSBABU, BIMAL BHATTACHERJEE, SUBHASIS BANERJEE, SAGAR CHOUDHURY, SWAPAN MITRA, DILIP GOSWAMI, MAHESH KUMAR SINGH (BHOJUDIH), SAIBAL ,S.K.CHATTERJEE, V.P.MISHRA,S.ROUTH, M. TARKESWAR RAO, K.N.S. IYER, UPENDRA PASWAN